संस्थापित-1933

स्मारिका

संत परमानन्द ब्लाइंड रिलीफ मिशन

MAIN HOSPITAL BUILDING BANGUR CHAKHSHU CHIKATSALYA

SANT PARMA NAND BLIND RELIEF MISSION

19, SHAMNATH MARG, DELHI-110006

मिशन द्वारा सन् 1933 से 1976 तक किये गये कुल शिविरों तथा अस्पतालों का संक्षिप्त विवरण ।

	कैम्प संख्या	रोगियों की संख्या	
		औषधि	आप्रेशन
1. बिहार	312	3,06,875	1,13,901
2. हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश	201	1,51,398	24,962
3. राजस्थान	159	1,60,542	36,353
4. उत्तर प्रदेश	97	70,507	13,924
5. मध्य प्रदेश	95	96,281	35,607
6. दिल्ली	66	38,066	10,141
7. बंगाल	39	59,881	25,056
8. गुजरात	16	18,068	3,010
9 महाराष्ट्र	13	29,869	7,580
10 उड़ीसा	10	3,668	772
11 नेपाल	8	16,855	5,734
योग	1016	9,51,810	2,77,050
दिल्ली के अस्पतालों तथा अन्य डिस्पेन्सरियों द्वारा		29,61,267	62,215
कुल योग		39,13,707	3,39,265

स्मारिका

समारोह

२९ नवम्बर १९७६

सन्त परमानन्द ब्लाइण्ड रिलीफ मिशन

१८, शामनाथ मार्ग, दिल्ली-११०००६

सम्पादक मण्डल —

श्री पवनकुमार बंसल — प्रधान सम्पादक

श्री मदनलाल तुलस्यान

श्री आर० एस० मुखीजा — प्रबन्ध सम्पादक

डा० बी० एन० खन्ना

विनय

स्मारिका का प्रकाशन एक शुभ प्रसंग है। मिशन का यह प्रथम प्रयास है इसलिए त्रुटियों तथा अशुद्धियों का होना स्वाभाविक ही है। स्मारिका प्रकाशन में हुयी त्रुटियों तथा अशुद्धियों के लिये हम सभी पाठकों से क्षमा चाहते हैं।

आशा है स्मारिका में दिये गये विभिन्न लेख अध्ययन पथ के पथिकों के लिए ज्ञान वर्धक सिद्ध होंगे। मिशन का विस्तृत विवरण पढ़ने से विदित होगा कि मिशन ने भारत के नेत्र पीड़ितों की सहायता में कितना योग दान दिया है। यदि यह स्मारिका उदार सज्जनों को जन कल्याण कार्य करने के लिये प्रेरित कर सकी तो हम अपने इस प्रयास को सफल समझेंगे।

स्मारिका प्रकाशन में मिशन को जिन सज्जनों से आर्थिक, बौद्धिक तथा शारीरिक सहयोग प्राप्त हुआ है हम उनके हृदय से आभारी हैं।

विशेषतया श्री मुरारी लाल जी सर्राफ के हम अत्यन्त आभारी हैं जिन्होंने हमें अपना अमूल्य समय देकर स्मारिका को सफल बनाने में योग दान दिया।

—सम्पादक मण्डल

विनम्र निवेदन–

मान्यवर,

अपने जनकल्याणकारी उद्देश्यों के साथ निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर "सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन" नामक यह संस्था अपने जीवन के ४३ वर्ष पूर्ण कर ४४ वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। जब हम इस मिशन के गौरवशाली अतीत की ओर दृष्टिपात करते हैं तो सहज रूप से गर्व का अनुभव किए बिना नहीं रह सकते। इस मिशन का शैशव एवं बाल्यकाल यद्यपि अत्यन्त कठिन परिस्थितियों से घिरा हुआ था तथापि जनहित की भावना से प्रेरित होकर यह निरन्तर सफलता पूर्वक उन्नति करता हुआ आगे बढ़ता रहा। अपने बाल्यकाल को समाप्त कर यौवन की दहलीज पर पहुंचते-पहुंचते इस मिशन ने इतनी अधिक ख्याति अर्जित कर ली कि उसके बाद बराबर हमें इसकी गतिविधियों का विस्तार कर अधिकाधिक रूप से जनता की इसकी सेवायें सुलभ करानी पड़ी। आज हम गर्व के साथ यह अनुभव करते हैं कि यह मिशन अपने लक्ष्य साधन में निरन्तर सफलता अर्जित करता जा रहा है।

इस मिशन के भविष्य की उज्ज्वलता और वर्तमान की सफलता को देखते हुए अतीत की कठिन परिस्थितियों का जब हम स्मरण करते हैं तो सहज ही हमें उन महान् विभूतियों का स्मरण हो आता है जिन्होंने प्राणि मात्र की सेवा के लिए इस मिशन को अपना माध्यम बनाया। उन महान् विभूतियों में श्री सन्त परमानन्द जी महाराज, श्री नन्दकिशोर जी मोरपंख वाला, श्री जुगल किशोर जी बिरला, श्री मगनी राम जी बांगड़, श्री श्रीकृष्ण दास जी जाजू, श्री हरिकृष्ण जी अग्रवाल यद्यपि आज हमारे मध्य में नहीं है तथापि उनके द्वारा किया गया नेत्र चिकित्सा सम्बन्धी जन कल्याण कार्य इस बात को अक्षरशः चरितार्थ करता है कि :–

"मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर
लोग साथ आते गए और कारवां बनता गया।"

यह मिशन आज भी अपने पावन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सतत् प्रयत्नशील है और उन महान् आत्माओं का आभार प्रकाशन कर रहा है। मिशन के द्वारा लोगों को नेत्र विकारों की चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना, आवश्यकता के अनुसार शल्य क्रिया (आपरेशन) द्वारा कठिन रोगों की चिकित्सा कराना, उनके लिए औषधि की व्यवस्था करना और यथा सम्भव अन्य सभी प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराना इस मिशन का मुख्य उद्देश्य है। इसका ज्वलन्त प्रमाण यह है कि मिशन ने अपनी सेवाओं का विस्तार अनेक प्रदेशों के सुदूर ऐसे गांव तक में किया है जहां ग्रामीण लोगों को सामान्य चिकित्सा सुविधा भी उपलब्ध नहीं है। जन सामान्य को अधिकाधिक रूप से सेवा करना प्रारम्भ से ही इस मिशन का मुख्य लक्ष्य रहा है।

वर्तमान में यह मिशन अपने उद्देश्यों की पूर्ति में श्री आत्माराम जी चड्ढा, श्री गंगा प्रसाद जी तथा श्री पवन कुमार जी बगला एवं अन्य समस्त कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से आशातीत सफलता प्राप्त कर रहा है। इसमें भी विशेषतः डॉ० खन्ना और उनके सभी सहयोगियों के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

साथ ही श्री जगदीश जी, श्री भोलादत्त जी एवं अन्य सभी कर्मचारियों के उदार सेवा भाव के कारण ही यह मिशन अपने अतीत कालीन प्रारम्भिक तम्बुओं के काल से निकलकर पूर्ण स्थायित्व प्राप्त कर चुका है और अपनी विभिन्न शाखाएं फैलाता हुआ जनकल्याणार्थ वट वृक्ष की भांति विशाल रूप धारण कर चुका है।

आज हमें आवश्यकता इस बात की है कि हमारे लिए अत्यन्त श्रद्धास्पद जिन विभूतियों ने इस पौधे को आरोपित किया था उसके संरक्षण एवं सुरक्षा के लिए हमारे लिए परम आदरणीय उपर्युक्त महानुभावों द्वारा निर्देशित मार्ग पर चल कर हम अपने वर्तमान नेत्र चिकित्सालयों को आधुनिकतम वैज्ञानिक उपकरणों से सुसज्जित करके रोगियों के हितार्थ समस्त साधन-सुविधाओं से संपन्न बनायें। हमारी यह प्रबल आकांक्षा है कि हम अस्पताल के वर्तमान (प्राचीन) भवन को नया रूप देकर उसकी एक-एक इंच भूमि का सदुपयोग कर सकें और रोगियों के लिए उसमें अधिकाधिक सुविधा जुटा सकें। इसके लिए हमें अपार धनराशि की आवश्यकता है जिसकी पूर्ति केवल आप जैसे उदार महानुभावों के आर्थिक सहयोग से ही सम्भव है। अतः इस महान् यज्ञ में पूर्णाहुति के लिए आपके उदार आर्थिक सहयोग हेतु मेरा आप लोगों एवं सम्पूर्ण समाज से विनम्र अनुरोध है। आशा है कि अपने उदार दान द्वारा आप अवश्य ही मुझे उपकृत कर अपने गौरवमय अतीत की सुरक्षा करेंगे। भारत सरकार से भी मैं विनम्र अनुरोध करता हूं कि इतनी विपुल धन राशि की आवश्यकता की पूर्ति केवल दान और चन्दे से सम्भव नहीं है। अतः वह अपनी विशेष अनुकम्पा द्वारा इस मिशन की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए भवन के निर्माण हेतु अधिकाधिक योगदान दें। ताकि हम भी देश की महान नेता प्रधान मंत्री **श्रीमती** इन्दिरा गांधी के २० सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के अन्तर्गत जन साधारण के लिए अधिकाधिक चिकित्सा सुविधा एवं अन्य सहायता उपलब्ध करा सकें।

इस संदर्भ में अस्पताल के प्रयोग के लिए श्री डोंगरे चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा दिया गया भवन उनकी महान् उदारता का परिचायक है। अतः इसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। इस अवसर पर हम उन समस्त दानी महानुभावों की उदारता एवं त्याग के लिए अतिशय कृतज्ञ हैं जिन्होंने समय-समय पर नेत्र चिकित्सा शिविरों के आयोजनों में किसी न किसी रूप में अपना सहयोग प्रदान किया है। वस्तुतः वे लोग ही इसकी रीढ़ हैं और उनको ही इसका सम्पूर्ण श्रेय है। अतः निश्चय ही वे हमारे साधुवाद के पात्र हैं।

मैं प्रबन्ध समिति के अपने सभी सहयोगी बन्धुओं एवं अन्य सभी सदस्य महानुभावों का भी हृदय से आभारी हूं जिन्होंने समय-समय पर अपना अमूल्य समय, उदार सहयोग, सत्परामर्श, समुचित मार्ग निर्देशन एवं बहुमूल्य सुझाव देकर जहाँ मेरे दुस्तर कार्य को सुगम बनाया वहाँ मिशन के सुचारु संचालन और उसके प्रत्येक कार्य को सफल बनाने में सतत प्रयत्नशील रहे। इस अवसर पर मैं विशेषतः श्री आत्माराम जी चड्ढा का अति कृतज्ञ हूं जो हर क्षण हर कदम पर मुझे उत्साहित कर आगे बढ़ने की सतत प्रेरणा देते रहे हैं।

मैं इस संस्था के अपने सभी कर्मचारियों पर विशेष गर्व का अनुभव करता हूं क्योंकि अन्य संस्थाओं की अपेक्षा यहाँ अल्प वेतन में भी वे परम सन्तोष का अनुभव करते हुए केवल सेवा की भावना से इस संस्था की सतत् उन्नति हेतु सदैव कार्यशील रहते हैं। मैंने स्वयं यह अनुभव किया कि सभी रोगियों के प्रति उनका व्यवहार सदैव मधुर एवं मृदुल रहता है, फलस्वरूप रोगी नियमित अस्पतालों की अपेक्षा मिशन द्वारा संचालित कैम्पों में आना अधिक पसंद करते हैं।

हमारी हार्दिक इच्छा थी कि मिशन की अन्यान्य गतिविधियों और कार्य-कलापों से सम्पूर्ण समाज एवं जन सामान्य को अवगत कराया जाय। इस इच्छा को मूर्तिरूप देने के लिए हमारे कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री गंगा बिशन

श्री भसीन ने अपना बहुमूल्य सुझाव दिया कि एक स्मारिका का प्रकाशन किया जाय जिस में मिशन के सभी कार्यों का सिंहावलोकन प्रस्तुत हो इससे हमारे जनसेवा उद्देश्य के लिये कुछ आर्थिक सहयोग भी प्राप्त हो सकेगा।

इस बात का हमें अत्यन्त हर्ष एवं गर्व है कि लगभग एक लाख से अधिक की धनराशि हमें इस निमित्त प्राप्त हो चुकी है, इस कार्य में श्री आत्माराम जी चड्ढा, श्री मदनलाल जी तुलस्यान, श्री पवन कुमार जी बंसल, श्री शिवशंकर जी तुलस्यान, श्री गंगा विशन जी भसीन, श्री प्रह्लाद सिंह जी, श्री कमलनारायण जी कपूर, श्री मदनलाल जी पुत, श्री आर० एल० मल्होत्रा, डॉ० बी० एन० खन्ना, डॉ० पी० सी० गुप्ता, डॉ० डी० पी० जैन, डॉ० प्राणनाथ सेठ, श्री सुशील कुमार जैन, श्री पी० के० घोष आदि महानुभावों का सहयोग वर्णनीय है। इस कृपा पूर्ण सहयोग के लिए एक ओर जहाँ मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ, दूसरी ओर मैं उन्हें हृदय से धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने इस कार्य के निमित्त विज्ञापन हमें सुलभ कराए।

इन सब कार्यों एवं साधनों के होते हुए भी इनका समुचित उपयोग और सही अर्थ में जनता की भलाई करने वाले तथा स्मारिका के प्रकाशनार्थ अपने ज्ञानवर्धक लेखों द्वारा हमारा मार्ग दर्शन करने वाले डाक्टरों के प्रति आभार व्यक्त न करना हमारी बहुत बड़ी कृतघ्नता होगी। यद्यपि वस्तुतः उनके कार्यों का हमारे द्वारा यथोचित मूल्यांकन किया जाना सम्भव नहीं है तथापि डॉ० एल० पी० अग्रवाल, डॉ० बी० एन० खन्ना, डॉ० पी० सी० गुप्ता, डॉ० डी० पी० जैन एवं डॉ० प्राणनाथ सेठ के प्रति अपना कृतज्ञता पूर्ण आभार प्रगट करता हूँ।

मैं महामहिम राष्ट्रपति जी, लोकप्रिय प्रधान मंत्री जी तथा अन्य सभी अपने नेताओं के प्रति उनके द्वारा प्रेषित शुभ कामनाओं के लिए भी अत्यन्त आभारी हूँ।

अन्त में मैं आज के अभ्यागत अपने मुख्य अतिथि एवं उपस्थित सभी महानुभावों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि आप सभी की उपस्थिति एवं सहयोग से आज का यह आयोजन इतना भव्य प्रेरणादायक और सफल बन सका है।

पुनः सभी के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। जय भारत!

मुरारीलाल सर्राफ
(अवैतनिक सचिव)

लहरा रही है ज्योति

लहरा रही है ज्योति चिदानन्द की ।
सब ब्रह्माण्डों के पृष्ठ भाग पर
सत्ता स्फूर्ति सबको दे रही है निजानन्द की ।
सारे विश्व के बाहर भीतर,
हृदय कमल में सूर्य मंडल में,
जगमगा रही है ज्योति महानन्द की ।
यह संसार असार है, अन्तिम
एक ज्योति है, अखण्डानन्द की ।
सूर्य चाँद विद्युत् अरु तारे,
अग्नि ज्योति है भवानन्द की ।
ज्योति बिना कछु और नहीं है,
अहं ज्योति है, ज्ञान यही है,
अहं ब्रह्मास्मि ज्ञान की ज्योति,
जग रही है घट-घट परमानन्द की ।

—•—

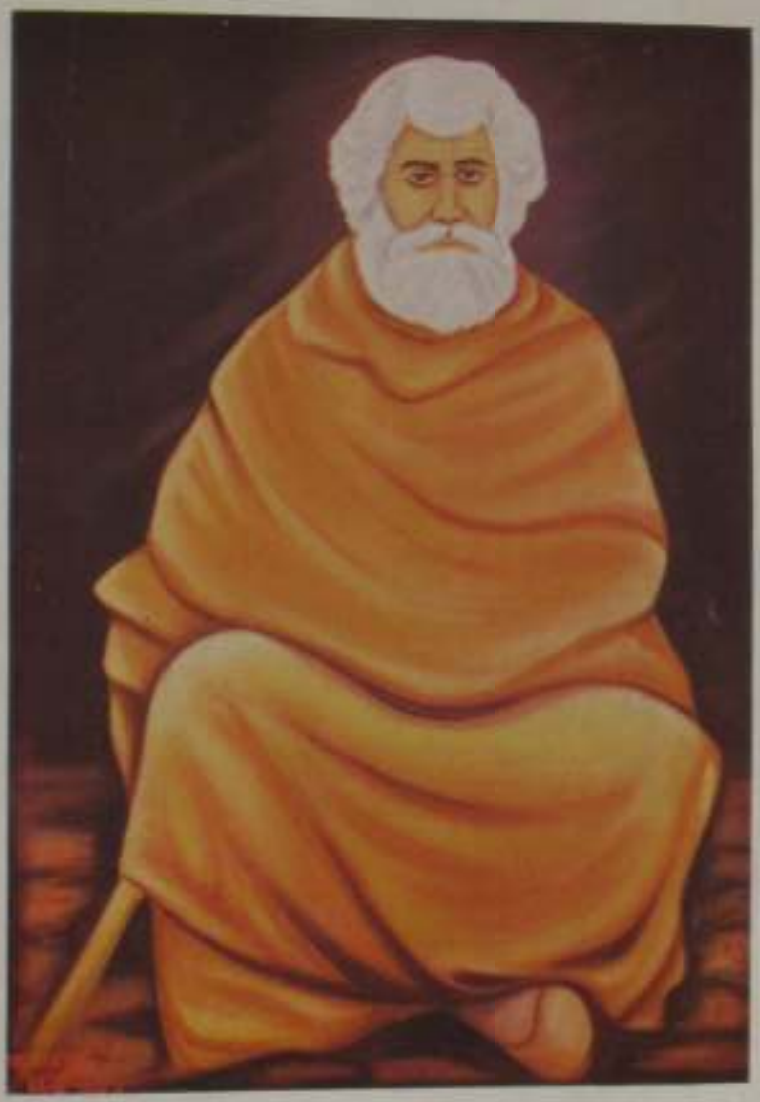

ब्रह्मीभूत श्री १०८ परमहंस श्री स्वामी परमानन्द जी महाराज

शुभ कामनायें

महामहिम राष्ट्रपति श्री फखरुद्दीन अली अहमद

लोकप्रिय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी

श्री जगजीवन राम
कृषि तथा सिंचाई मंत्री,
भारत सरकार

श्री रामनिवास मिर्धा
पूर्ति और पुनर्वास मंत्री,
भारत सरकार

श्री हरकिशन लाल भगत
निर्माण और आवास राज्य मंत्री,
भारत सरकार

श्री डी० पी० यादव
शिक्षा तथा समाज कल्याण उपमंत्री,
भारत सरकार

श्री कृष्ण स्वरूप
कार्यकारी पार्षद,
स्वास्थ्य तथा समाज कल्याण दिल्ली

श्री बहादुर राम टम्टा
निगमायुक्त,
दिल्ली नगर निगम

श्री आत्माराम चड्ढा
प्रधान, सन्त परमानन्द
ब्लाइण्ड रिलीफ मिशन

श्री नारायण दास
भूतपूर्व उपप्रधान,
सन्त परमानन्द ब्लाइण्ड रिलीफ मिशन

१०८ सन्त परमानन्द जी महाराज

सन्तों का परिचय देना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन कार्य है। क्योंकि वे आत्म परिचय, आत्म श्लाघा एवं लोकेषणा से दूर रहते हुए "स्वान्तः सुखाय, बहुजन हिताय" कर्तव्यनिष्ठ, जन मंगल में कार्यशील, त्रिविध तापों से व्यथित जनता का पथ प्रदर्शन करते हुए "जनता जनार्दन" की सेवा में ही जीवन उत्सर्ग कर देते हैं, इसी लिए सन्त शब्द स्वतः सिद्ध है जो स्वयं इस जगज्जाल से निकल कर दूसरों को पार करे वही सन्त है। सन्त महात्मा ही प्राचीन काल से हमारे धर्म एवं संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। उनकी यही कामना रही है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्
इन्हीं भावनाओं से ओत प्रोत थे, परमादरणीय
"सन्त परमानन्द जी "महाराज"।

इनका जन्म किस प्रान्त, किस जाति में कब और कहाँ हुआ यह उनके सुपरिचित अनन्य भक्तों को भी ज्ञात नहीं है। सन्त ही तो है "जाति पाँति पूछे नहि कोई, जो हरि को भजे हरि का होई"। जाति पाँति, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, छुआ छूत आदि के भेद भाव को छोड़ कर जनहित के लिये सन्त श्री परमानन्द जी महाराज ने रेवाड़ी के समीप जंगल में श्री भगवत् भक्ति आश्रम का निर्माण किया। आश्रम के निर्माण में अनेकों सन्तों, भक्तों, ब्रह्मचारियों एवं देवियों ने अपने जीवन अर्पित कर दिये, जिसमें श्री भक्त नन्द किशोर जी मोरपंख वाला तथा राय बहादुर राव बलबीर सिंह जी दो प्रमुख स्तम्भ थे। इस आश्रम से विविध प्रकार की लोक कल्याण कारी प्रवृत्तियां प्रारम्भ की गई। इनमें स्त्री शिक्षा और पशुरोद्धार पर विशेष बल दिया गया। इसके लिए कन्या पाठशाला, हरिजन पाठशाला, ब्रह्मचर्याश्रम, आदर्श गौशाला, वृक्षारोपण विभाग आदि खोले गये। जिससे जनता को एक नई दिशा प्राप्त हुई। श्री महाराज जी के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित थे —

(1) श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना।
(2) गोरक्षण और उसके लिए गोचर भूमि छुड़वाना।
(3) वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना।
(4) शिक्षा का प्रचार करना जिससे मनुष्यमात्र विद्या लाभ कर सके, और शिक्षा की प्राचीन प्रथा को फिर से प्रचलित करना।
(5) बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना।
(6) आस-पास के ग्रामों में परस्पर के झगड़े और वैमनस्य को मिटाकर शान्ति और प्रेम बढ़ाना।
(7) सब संस्थाओं में भगवतभक्ति और धर्म का भाव जागृत करना।
(8) राजा और प्रजा सबही का हित चिन्तन करना।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चरखी दादरी, जीन्द, पानम, नरेला, गड़ी आदि अनेकों स्थानों पर आश्रम बनवाये।

एक समय श्री 108 स्वामी परमानन्द जी की आंख में मोतिया बिन्द हो गया, श्री भक्त नन्दकिशोर जी मोरपंख वाला मोगा से सुप्रसिद्ध नेत्र सर्जन डाक्टर मथुरादास जी पाहवा को रेवाड़ी आश्रम में बुलाकर लाये और महाराज जी की आंखों का आपरेशन करवाया। इस प्रकार सर्वप्रथम चक्षुदान यज्ञ (आई कैम्प) भगवत भक्ती आश्रम रेवाड़ी में 1933 में हुआ जिसका परिणाम बहुत अच्छा रहा। इससे प्रभावित होकर अन्य भी कई कैम्प किये गये जिसमें 1935 में शिमला कैम्प प्रसिद्ध है उस कैम्प का लेडी विलिंगटन ने निरीक्षण किया और कैम्प के कार्य से बहुत प्रभावित हुई, और उन्होंने इस कार्य में सहयोग देना स्वीकार किया। श्रावण कृष्णा पंचमी विक्रमी सम्वत् 1993 दिनांक 9 जुलाई 1936 को महाराज का निर्वाण हुआ। हमें खेद है कि महाराज श्री मिशन के इस रूप को नहीं देख सके मगर उनके आशीर्वाद से यह आज उन्नत, विकसित और परिवर्धित होकर वर्तमान रूप में जनसेवा में रत है, इस प्रकार सन्त परमानन्द जी महाराज जैसे महान लोकोपकारक की प्रेरणा के कारण ही यह सम्भव हो सका, परमपिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि ऐसे सन्त समय समय पर अवतरित होकर लोक सेवा एवं उच्चादर्शों से जनता का मार्ग दर्शन करते रहें।

सन्त परमानन्द जी महाराज के चरण कमलों में भावपूर्ण श्रद्धा-सुमन सादर समर्पित है।

स्वर्गीय सेठ जुगलकिशोर जी बिरला

विश्व विख्यात धर्मनिष्ठ सेठ जुगल किशोर जी बिरला ने जीवन भर, दीन दुखियों, अनाथों, विधवाओं की सहायता करना, हिन्दु धर्म, संस्कृति, साहित्य और राष्ट्र की चहुंमुखी उन्नति के लिए सतत प्रयत्नशील रहना, अधिक से अधिक सम्पत्ति परोपकार में लगाना, मन, वचन और कर्म से पुण्य कार्य करना ही उनकी जीवन चर्या थी। ये सब दिव्य-गुण एवं कर्म उन्हें पूर्व जन्म का योगी सिद्ध करते हैं।

कम आयु में ही अपने पिता, स्वर्गीय श्री राजा बलदेव दास जी बिरला द्वारा व्यापार क्षेत्र में लाये गये। 18 वर्ष की आयु में वे व्यापार के सम्बन्ध में कलकत्ता चले गए और 2 वर्ष की अल्पावधि में हो कलकत्ता में उन्होंने अपना कार्यालय खोल दिया, उनका जीवन कुशल व्यवसायी, दूरदर्शी एवं समाज सेवी रहा। वे आदर्शों के पक्के और प्रतिभा के भी धनी थे।

जिस समय उन्होंने कलकत्ता में व्यापार आरम्भ किया उन्हें तत्कालीन ब्रिटिश व्यापार नीति की प्रति-इन्द्विता का सामना करना पड़ा, उस समय मैनचेस्टर को भारत में कपड़े के व्यापार का एकाधिपत्य प्राप्त था। उन्होंने दृढ़ता के साथ व्यापार में प्रगति की। श्री जुगल किशोरजी बिरला ही सर्वप्रथम व्यक्ति थे जो एशियाई देशों के साथ व्यापार-सम्बन्ध स्थापित करने में आगे बढ़े और सफल रहे। उन्होंने वस्त्रोद्योग में जापान के साथ सम्पर्क स्थापित किया। बिरला बन्धु ने देश के उद्योग में कितना योग दान दिया भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व इससे भली-भांति परिचित है।

हिन्दु धर्म में अगाध श्रद्धा होने के कारण, उन्होंने प्राचीन मन्दिरों के जीर्णोद्धार के लिए "बिरला-जन कल्याण-ट्रस्ट" की स्थापना की। भारत तथा उसके बाहर भी हिन्दुत्व की रक्षा एवं प्रचार के लिए, विशेषतया प्रवासी हिन्दुओं के बीच धर्मोपदेशकों को भेजने के लिए, "अखिल भारतीय आर्य (हिन्दु) धर्म सेवा संघ" की स्थापना की।

यह निश्चित रूप से कहना कठिन है कि उन्होंने कितने मन्दिरों का निर्माण एवं जीर्णोद्धार, अपने जीवन काल में किया, तथा योगदान दिया। उनके द्वारा निर्मित विशाल मंदिरों में श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर नई दिल्ली, श्री कृष्ण मंदिर मथुरा, श्री विश्वनाथ मंदिर काशी (हिन्दु विश्वविद्यालय), बुद्ध मन्दिर नई दिल्ली, बुद्ध मंदिर वर्ली बम्बई, सरस्वती मन्दिर पिलानी, श्री रुक्मिणी मन्दिर कल्याण, श्री लक्ष्मी नारायण मंदिर भोपाल और श्री शिव मन्दिर ब्रजराज नगर उड़ीसा, अतीव दर्शनीय और विख्यात हैं।

अपने जीवन काल में उन्होंने अनेक सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं को संरक्षक, पोषक एवं सहायक के रूप में सक्रिय योग दान दिया है यह सर्वविदित है। जिनमें सन्त परमानन्द ब्लाइन्ड रिलीफ मिशन भी है। इस संस्था के वे 16-3-1944 से जीवन पर्यन्त अध्यक्ष रहे हैं। जब मिशन को बिरला जी का सुयोग्य नेतृत्व प्राप्त हुआ तब मिशन आर्थिक संकट में से गुजर रहा था। बिरला जी ने आर्थिक सहायता देकर मिशन को संकट से उबार कर अपने पैरों पर खड़ा किया और मिशन की सहायतार्थ अपनी फर्मों द्वारा वार्षिक, कुछ नेत्र सुधारक शिविर लगवाये जो अब तक निरन्तर लगते आ रहे हैं जिनमें से एक ग्वालियर याई-कैम्प में ही प्रतिवर्ष लगभग 1800 एक हजार आठ सौ आपरेशन होते हैं।

उनकी अध्यक्षता एवं कुशल पथ प्रदर्शन से ही यह संस्था बीज रूप से वट वृक्ष की भांति अपनी शाखा प्रशाखाओं को बढ़ाकर दिल्ली तथा भारत के विभिन्न भागों में अन्धता निवारण के कार्य क्रम को बढ़ाती हुई, स्वर्गीय श्री जुगल किशोर जी बिरला के त्याग एवं सेवा भावना के अनुरूप समाज सेवी भाव से जनता जनार्दन की सेवा कर रही है।

संस्था अपने स्वर्गीय अध्यक्ष को उसी सेवा भाव से श्रद्धा सुमन समर्पित करती है।

स्वर्गीय सेठ जुगल किशोर जी बिरला

जन्म : ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिप्रदा, संवत् १९४० — निधन : आषाढ़ कृष्णा द्वितीया, संवत् २०२४

स्वर्गीय सेठ मगनी राम जी बांगड़

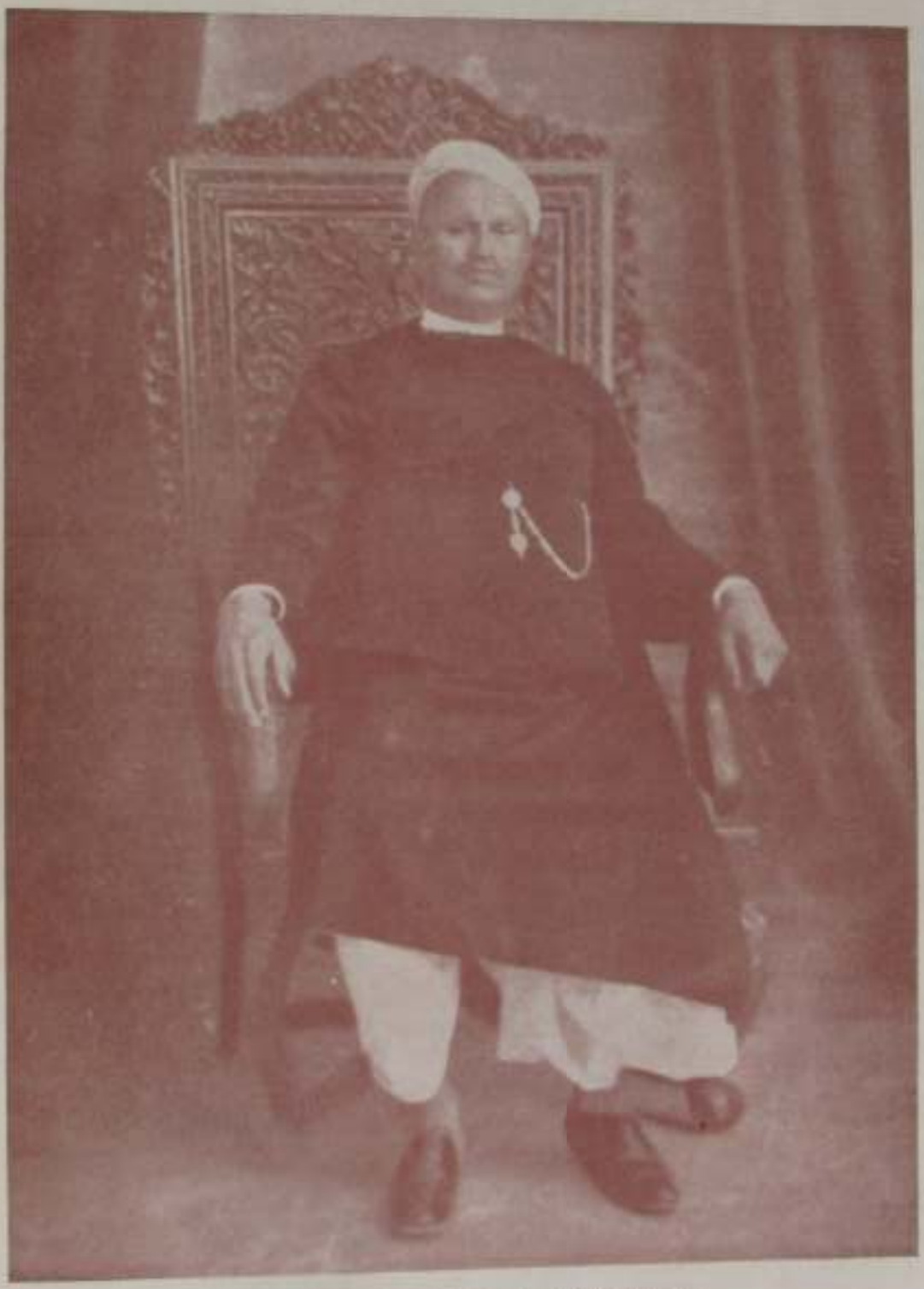

जन्म : विक्रम संवत् १९३२ श्रावण कृष्णा ५ (नागपंचमी)
वैकुण्ठ वास : विक्रम संवत् २००३ द्वितीय आषाढ़ शुक्ला १५ (गुरुपूर्णिमा)

स्वर्गीय भक्त नन्दकिशोर जी मोरवंश वाला

भक्त नन्द किशोर जी मोरपंख वाला

प्रसिद्ध समाज सेवक श्री भक्त नन्दकिशोर जी मोर पंख वाला को प्रारम्भ से ही लोक हित के कार्यों से अत्यन्त प्रेम था। जब समाज में स्त्री शिक्षा का अभाव था और लड़कियों को अक्षर ज्ञान कराना भी पाप समझा जाता था, उस समय उन्होंने अपने जन्म स्थान चरखी दादरी में समाज के ठेकेदारों का विरोध होते हुए भी अपनी ही हवेली में एक कन्या पाठशाला प्रारम्भ की और उस पाठशाला में सर्वप्रथम अपनी पुत्रियों को शिक्षा दिलाई जिससे प्रेरित होकर दूसरे लोगों ने भी अपनी कन्याओं को शिक्षित करना प्रारम्भ किया। इसी प्रकार उन्होंने अपने व्यापार स्थान भटिन्डा में सन्तों की सेवा में 'सन्तपुरा' तथा गो-सेवा-कार्य के लिए गोशाला बनवाई।

सन् 1912 में जब वे व्यापार के कार्य के लिए संगरूर गये हुए थे तब उन्हें श्री परमानन्द जी महाराज के दर्शन हुए। उनके उपदेशों से वे इतने प्रभावित हुए कि अपना लाखों का व्यापार छोड़कर वे परिवार सहित उनकी सेवा में श्री भगवद्भक्ति आश्रम रेवाड़ी में आकर रहने लगे और आश्रम के निर्माण में अपना तन मन, धन सब कुछ अर्पित कर दिया।

एक बार गुरु महाराज सन्त परमानन्द जी को नेत्र पीड़ा देखकर उन्होंने संकल्प किया कि यदि गुरु जी की आंख बिल्कुल ठीक हो गयी तो मैं गरीब नेत्र रोगियों के लिए चक्षुदान यज्ञ कराऊंगा। इस भावना से प्रेरित होकर उन्होंने सबसे पहला चक्षुदान यज्ञ रेवाड़ी में सन् 1933 में कराया। इस प्रकार महाराज जी के प्रति उनके प्रेम के कारण ही यह योजना प्रारम्भ हुई। तभी से कार्य प्रारम्भ होकर इस संस्था का आज का स्वरूप हमारे सामने निखर कर आया है।

धीरे-धीरे इस योजना का विस्तार होने लगा। स्थान-स्थान पर मेले करवाये जाने लगे। जहां-जहां भी भक्त जी इन मेलों का आयोजन करते थे प्रायः वहां उनकी धर्म पत्नी श्रीमती भकनाणी जी भी अपनी पुत्रियों तथा आश्रम के स्वयं सेवक एवं सेविकाओं सहित जाती थीं। उनके भोजन आदि का प्रबन्ध स्वयं अपने खर्चे से करती थीं, एक बार सन् 1935 में कुरुक्षेत्र में हुए चक्षुदान यज्ञ में ऐसा आर्थिक संकट आया कि श्रीमती भकनाणी जी ने अपने हाथों की चूड़ियां भी सहर्ष उतार कर देदी।

9 जनवरी 1936 को श्री महाराज जी के समाधिस्थ होने के पश्चात् श्री भक्त जी ने बहुत से मेले किए। इनमें से दो विशाल मेले दिल्ली के पुराना किला में भी हुए जिसमें बहुत सी बाधाएं आयीं किन्तु बाद में आयोजनों की सफलता देखकर दिल्ली के तत्कालीन चीफ मेडिकल आफिसर कर्नल कुक मेक ने भी इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

सन 1942 में सेठ जमना लाल जी बजाज के निमंत्रण पर वर्धा में एक आई कैम्प किया गया जिसका पूज्य महात्मा गांधी जी ने दो बार निरीक्षण किया और वह इस कार्य से बहुत प्रभावित हुए।

मिशन का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए 1941 में मिशन का कार्यालय आनन्द पर्वत दिल्ली में लाया गया। बाद में करीब पांच वर्ष में 1941 से 1946 तक मिशन का कार्य बहुत बढ़ गया। जिसका श्रेय श्री भक्त नन्दकिशोर जी मोरपंख वाला, उनके परिवार के सदस्यों, विशेष कर कुमारी कमला देवी को है जो उस समय मिशन की मंत्री भी रहीं। अन्य भी कई सज्जनों का विशेष सहयोग रहा जिनमें आश्रमवासी श्री भूमानन्द जी, सेठ रामकृष्ण जी डालमियां तथा श्री रामसरनसिंह जी इत्यादि प्रमुख रहे, वैसे तो सेठ जुगलकिशोर जी बिरला पहले भी मिशन को अपना सहयोग देते थे, मगर बाद में मिशन के सभापतित्व का भार बिरला जी को सौंपकर श्री भक्त नन्दकिशोर जी जन्म पर्यन्त मिशन की सेवा करते रहे। सच तो यह है कि उन्होंने मिशन की उन्नति ही अपने जीवन का लक्ष्य बना दिया था।

यह कैसा संयोग है कि 23 वर्ष बाद सन् 1959 में स्वामी जी के समाधिस्थ तिथि के दिन ही भक्त नन्दकिशोर जी का भी गोलोक गमन हुआ। यह गुरुदेव के चरणों में उनकी श्रद्धा एवं प्रेम की पराकाष्ठा थी। परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि समय-समय पर ऐसे भक्तजन लोक कल्याण हेतु अवतरित होते रहें।